ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 15 कुल पृष्ठ-8 10 से 16 जनवरी, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 मा.शी.शु.-07

प्रसिद्ध राष्ट्रवादी आर्यनेता श्री प्रकाशवीर शास्त्री के 95वें जन्म दिवस पर

स्मृति व्याख्यान माला का हुआ भव्य आयोजन

देश के प्रतिष्ठित विद्वानों ने 'राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की चुनौतियाँ' विषय पर प्रस्तुत किये अपने विचार

आर्य समाज के महान नेता, प्रखर राष्ट्रवादी विचारक, ओजस्वी वक्ता पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी के 95वें जन्मदिवस के अवसर पर उनके विचारों एवं कार्यों पर केन्द्रित स्मृति व्याख्यान माला का शानदार आयोजन 30 दिसम्बर, 2018 को 'इंडिया इण्टरनेशनल सेन्टर' नई दिल्ली में किया गया। कार्यक्रम का आयोजन पं. प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति न्यास के तत्वावधान में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। दीप प्रज्ज्वलित करने में सर्वश्री स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व शिक्षामंत्री डॉ. योगानन्द शास्त्री, प्रख्यात लेखक एवं पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी, लोकसभा के पूर्व सचिव श्री सुभाष कश्यप, राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठा. विक्रम सिंह, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' एवं न्यास के अध्यक्ष श्री शरद त्यागी जी ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से दीप प्रज्ज्वलन के कार्य को सम्पन्न किया।

इस अवसर पर गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियों ने वैदिक मन्त्रोच्चारण द्वारा मंगलाचरण कर सभा को मंगलमयी बना दिया। तत्पश्चात् शास्त्री जी की जीवन यात्रा पर एक लघु फिल्म दिखाई गई जिसमें शास्त्री जी के बचपन, हैदराबाद सत्याग्रह, पंजाब हिन्दी आन्दोलन, संसद में उनकी भूमिका का वर्णन, देश के राजनेताओं द्वारा उन्हें दी गई श्रद्धांजलियाँ जिनमें विशेष रूप से स्व. श्री अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा दी गई वीडियो श्रद्धांजलि भी प्रदर्शित की गई।

व्याख्यान माला का प्रारम्भ करते हुए न्यास के अध्यक्ष श्री शरद त्यागी जी ने अपने उद्घाटन भाषण में जहाँ प्रकाशवीर शास्त्री जी के जीवन मूल्यों के सम्बन्ध में प्रकाश डाला वहीं उन्होंने देश के समक्ष मंडरा रहे खतरों जैसे जातिवाद, सम्प्रदायवाद का कट्टरवाद, आर्थिक गैर बराबरी एवं देश की एकता को चुनौती देने वाले अन्य ज्वलन्त मुद्दों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पहले आकाशवाणी पर अंग्रेजी के समाचार हिन्दी के समाचारों से दो गुनी अवधि में प्रसारित किये जाते थे और हिन्दी समाचारों का प्रसारण अंग्रेजी समाचारों के बाद किया जाता था। श्री शास्त्री जी ने यह मुद्दा संसद में उठाया और हिन्दी भाषा के साथ हो रहे अन्याय को बन्द करवाया। परिणामस्वरूप हिन्दी समाचारों का प्रसारण पहले शुरू हुआ और समाचार प्रसारण की अवधि भी हिन्दी तथा अंग्रेजी की समान कर दी गई। इसी प्रकार लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयन्ती सन् 1962 से पहले दिल्ली में सरकार द्वारा नहीं मनाई जाती थी। इसे स्वतंत्र रूप से स्व. शास्त्री जी ने मनाना प्रारम्भ किया और लम्बे समय तक इस परम्परा का बखूबी निर्वहन किया। उनके संयोजन में मनाई जाने वाली सरदार पटेल जयन्ती में देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा विभिन्न पार्टियों के नेता भी सम्मिलित होते थे। बाद में सरकार की ओर से इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम को मनाना प्रारम्भ किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में राष्ट्रीय एकता के समक्ष चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जातिवाद, साम्प्रदायिकता, आर्थिक गैर–बराबरी तथा भ्रष्टाचार जैसी ज्वलन्त समस्याएँ हमारी राष्ट्रीय एकता के लिए सबसे बड़े खतरे के रूप में पूरे देश में व्याप्त है। जब तक हम इन्हें समाप्त नहीं करेंगे तब तक राष्ट्रीय एकता असम्भव है। स्वामी जी ने वेद और महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण को प्रस्तुत मंत्र **"ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रोऽअजायत।।"** का उल्लेख करते हुए बताया कि जिस प्रकार शरीर में मस्तिष्क ब्राह्मण का रूप है, भुजायें क्षत्रिय हैं और पेट वैश्य तथा पैर शूद्र रूप में विद्यमान हैं और पूरा शरीर इन चारों के अत्यन्त समन्वय और सहयोग से स्वस्थ रहता है इसी प्रकार पूरा राष्ट्र भी सभी वर्गों एवं कथित वर्तमान जाति–बिरादरियों के परस्पर मेल, प्रेम, सहयोग एवं सहअस्तित्व की भावना से ही सुगठित एवं शक्तिशाली

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

'ईश्वर जीव और प्रकृति यही तीनों सृष्टि के मूल तत्व हैं'

– श्री हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक

यह वेदानुसार ऋषि दयानन्द की खोज है जो बिल्कुल सत्य है।

संसार में दो चेतन पदार्थ हैं– ईश्वर और जीवात्मा और एक जड़ पदार्थ है मूल प्रकृति अथवा उससे बना हुआ सम्पूर्ण प्राकृतिक जगत्।

प्रश्न यह था कि ईश्वर तो जड़ पदार्थ में भी व्यापक है तो इससे वह पदार्थ चेतन क्यों नहीं हो जाता? यह एक विचारणीय विषय प्रस्तुत किया गया है।

पहली बात तो यह है कि परमात्मा कैसा है कोई देख नहीं सका। परन्तु ज्ञानी लोग उसके होने का ज्ञान इस आधार पर करते हैं जैसे पढ़ते हुए विद्यार्थी को देखकर विद्या का ज्ञान होता है। जैसे पुत्र को देखकर उसके जन्मदाता पिता का ज्ञान होता है। जैसे किसी सुन्दर आभूषण को देखकर उसको बनाने वाले शिल्पी का ज्ञान होता है, जैसे किसी कारखाने में मानव उपयोग के लिए बन रही मशीनों को देखकर उसे बनाने वाले वैज्ञानिक का ज्ञान होता है उसी प्रकार मानव शरीर की विज्ञान संगत रचनाओं तथा जीवन उपयोगी भिन्न–भिन्न पंचतत्वों एवं सूर्य–चन्द्रादि की विधि पूर्वक सृष्टियों को देखकर सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर का ज्ञान स्वाभाविक रूप में हो जाता है। वह हमें भले ही न दिखता हो पर उसका होना सत्य है क्योंकि जो अति सूक्ष्म सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और जिसमें सर्वज्ञता का गुण है वहीं एकमात्र ईश्वर है और उसी ने बुद्धिपूर्वक सोच समझकर सर्वश्रेष्ठ मानव तथा अन्य सब प्राणी उत्पन्न हो सकने के लिए पहले उपयोगी पंच सूक्ष्म भूतों से, पंचतत्वों एवं सूर्य–चन्द्रादि को विभिन्न प्रकार के परमाणुओं के समूहों से निर्माण कर दिया उसके पश्चात् सागर नद–नदियाँ, पहाड़–पर्वत और वनस्पतियों की उत्पत्ति की। वनस्पतियों की उत्पत्ति पहले क्यों की क्योंकि वह जानता था कि प्राणियों की उत्पत्ति के पहले इन सबकी आवश्यकता पड़ेगी। उदाहरण के लिए जैसे शिशु जन्म के पहले ईश्वरीय नियम से माता के स्तन में दूध की व्यवस्था हो जाती है वैसे ही प्राणियों के उत्पन्न होने के पहले शुद्ध आक्सीजन एवं फलादि के लिए वृक्ष वनस्पतियाँ पहले उत्पन्न हुईं।

यदि जड़ प्रकृति के कणों में ईश्वर चैतन्यता और सर्वज्ञता का गुण दे देता तो प्रकाश कणों के चुम्बकीय तरंग शब्दादि को वहन करने का गुलाम न बनता। आप जड़ पदार्थों से बातें भी कर सकते थे, यह संभव नहीं है क्योंकि सृष्टिक्रम के विरुद्ध है।

प्रश्न था कि यदि ईश्वर व्यापक है तो जड़ पदार्थ अथवा मूर्त्ति चेतन क्यों नहीं?

उत्तर– हमारे विचार से अग्नि में जलाने का गुण है और वह सब जगत् में व्याप्तमान है पर सभी उसके गुणों से जलने नहीं लगते।

2. सूर्य का प्रकाश सभी पदार्थों पर पड़ रहा है पर वे सब पदार्थ सूर्य जैसे प्रकाशवान नहीं बन सकते।

3. अग्नि का गुण, पृथिवी, जल, वायु, अन्तरिक्ष सभी में व्याप्त है पर वे चारों अग्नि तत्व नहीं बन सकते।

4. इस शरीर में आत्मा के द्वारा प्राण क्रियाशील है पर प्राण आत्मा के ज्ञातृत्व गुणों को नहीं अपना सकता क्योंकि प्राण चेतन से स्थूल है। इसी प्रकार ईश्वर कारण रूप प्रकृति से सूक्ष्म और आत्मा से भी सूक्ष्म है। इसलिए वह सर्वशक्ति सम्पन्न है। बनाने वाला बनने वाले पदार्थ से पृथक् होता है। अतः बनने वाला उपादान बनाने वाले का ज्ञानादि चैतन्यता गुणों को वह प्राप्त नहीं कर सकता। जैसे बनाने वाला चैतन्य है तो उसके द्वारा जो पदार्थ बनते हैं वे उस जैसे चैतन्य नहीं हो सकते। वैज्ञानिकजनों ने जितने इलेक्ट्रॉनिक यन्त्र, दूरदर्शन, कम्प्यूटर आदि बनाये हैं वे सब जड़ कणों से बुद्धिपूर्वक बनाये गये हैं परन्तु वे यंत्र या उनके कण कभी भी स्वयं वैज्ञानिक नहीं बन सकते।

जड़ पदार्थ अपने आप न हिल सकता है न स्वयं कुछ बुद्धिपूर्वक बन जाने के उसमें गुण हैं– अतः उन कणों में जो गुण और गति है सब ईश्वर की देन है। जिसे व्यापक, प्रेरक और प्रकाशक कहा जाता है। वेद मंत्र कहता है कि–

यमेरिरे भृगवो विश्वेदसं नाभा पृथिव्या भुवनस्य मज्मना।

अग्निं तं गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमेय एको वस्वो वरुणो न राजति। – ऋ 1/143/4

हे मनुष्यों! जो विद्वानों के द्वारा जानने योग्य सर्वव्यापक, प्रशंसा योग्य सच्चिदानन्द आदि लक्षणों वाला सर्वशक्तिमान अनुपम, अतिसूक्ष्म, स्वयंप्रकाशस्वरूप और अन्तर्यामी परमेश्वर है उसे योगाघों के अनुष्ठान की सिद्धि के द्वारा तुम अपने अन्दर जानो।

वैज्ञानिक ऋषि पतंजलि ने अष्टांग योग द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया था तभी तो अपने योगशास्त्र में कहा है–

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।। – योग. 1/24

क्लेश, कर्मफल और वासनाओं से (अपरामृष्ट) असम्बद्ध पुरुष विशेष ईश्वर है। पाच क्लेश अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। ईश्वर जो पुरुष जीव–जीव नहीं किन्तु पुरुष विशेष है।

ईश्वर के अर्थ हैं 'ईशनशील' अर्थात् इच्छामात्र से सम्पूर्ण जगत् के उद्धार करने में समर्थ। योगदर्शन में–

तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्। – योग.1/25

ईश्वर को इस प्रकार समस्त ज्ञान का स्रोत कहते हुए बतालाया गया है कि वह (ईश्वर) जिसका काल विभाग नहीं कर सकता, पूर्व (देव्य) ऋषियों का भी गुरु है। यथा–

स पूर्वेमेशामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्। – योग 1/27

इस प्रकार ईश्वर के अस्तित्व को तो सभी दर्शनकारों ने माना है। यथा–

ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात्। – न्याय 4/1/19

मनुष्य के कर्मों के फल जिसके हाथ हैं, वही ईश्वर है। गीता के पाँचवें अध्याय में दर्शाया है। ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां... जिनका अन्तःकरण का अज्ञान विवेक ज्ञान द्वारा नाश हो जाता है, उनका वह ज्ञान सूर्य के सदृश उस ब्रह्म परमात्मा के स्वरूप को हृदय में प्रकाशित करता है अर्थात् साक्षात् करता है।

ईदृशेश्वरसिद्धि सिद्धाः। – साख्य. 3/57

स हि सर्ववित् सर्वकर्त्ता। – साख्य. 3/56

इन सूत्रों से ईश्वर की सिद्धि स्पष्ट शब्दों में बताई गई है। वह चेतन तत्व ईश्वर, प्रकृति जिसके अधीन ज्ञान व्यवस्था और नियमपूर्वक पुरुष के अपवर्ग के लिए प्रवृत्त हो रही है सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है।

1. जिसने सबको उत्पन्न किया वही ईश्वर है।

2. जिसने सृष्टि के आदि में वेदों का बीजात्मक ज्ञान दिया वही सर्वज्ञ है।

3. जो सब में प्राण के समान व्यापक और प्रकाशक है वही ब्रह्म है।

4. ईश्वर ने सूर्य की एक महत्वपूर्ण सृष्टि की है। किन्तु सूर्य में किन–किन उपादानों से कितनी संख्याओं में और किन–किन मात्राओं में कैसे क्या हो रहा है, इसका सही ज्ञान किसी को नहीं है। अतः जिसने सूर्यादि को उत्पन्न करके जिसमें अरबों वर्षों से तेजस्कृय उपादानों को अविरत ऊर्जा एवं अग्नि शिखाओं को उत्पन्न करने वाली उसके गर्भ में दिव्य अनजाने शक्तियों को प्रदान कर रहा है, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है और जिन सूर्य–चन्द्रादि के प्रभाव तथा पंचतत्वों से समुद्र एवं विभिन्न प्रकार के वनस्पतियों और जीवों का जन्म हुआ है, उन सबका निमित्त कारण ईश्वर है।

बहुत से वैज्ञानिकजन आत्माओं और परमात्मा को नहीं मानते। पर वह कोई भौतिक पदार्थ तो है नहीं कि जैसे न्यूट्रोनों कणों से टक्कर लगाया और हिग्सवोसन= गॉडपार्टिकल अर्थात् सृजनकारक कण (जो प्रकाश की गति से कई गुणा अधिक है) का आविष्कार हो गया। उसी प्रकार सर्वव्यापक, प्रेरक और प्रकाशक ईश्वर को भी वैज्ञानिक उसी जैसे कण के रूप में देखना चाहते हैं पर यह सम्भव नहीं है क्योंकि वह तो उनसे परे और सर्वव्यापक होने से उसकी कोई गति नहीं है। अतः उन्हें किसी मशीन के माध्यम से ईश्वर का दर्शन नहीं हो सकता। क्योंकि दिल्ली जाने वाली रेल से कोई कोलकाता नहीं पहुँच सकता। ईश्वर को देखने और उसके आनन्द का बोध करने के लिए साधन अलग है।

ऋषि दयानन्द की समाधि कभी 18 घण्टे की हो जाती थी इसलिए उन्हें भी अष्टांग योग की सिद्धि से सच्चे शिव परमेश्वर का साक्षात्कार हो गया था। उदाहरण के लिए एक बार ऋषि दयानन्द ने नास्तिक मुंशीराम से कहा था कि आपकी तर्कनाशक्ति प्रबल है। ऋषि ने कहा श्रद्धा की वेदी पर विश्वास का दीपक जलाओ, परमेश्वर का साक्षात्कार हो जायेगा। इस मानसिक दीक्षा ने उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया।

प्रश्न था कि ईश्वर जब मूर्त्ति में भी है तो वह चेतन क्यों नहीं हो जाती? उत्तर– वायु में प्राणादि अनेक गुण हैं वह दिखता नहीं है पर सब जगह मौजूद है उससे कोई अलग नहीं है वह मूर्त्ति, मानव एवं मुर्दों में भी है किन्तु जैसे मूर्त्ति जड़ होने से वायु में विद्यमान प्राण को ग्रहण नहीं कर सकती, उसी प्रकार सर्वोपरि ईश्वर की चैतन्यता और सर्वज्ञता के गुणों को जड़ पदार्थ प्राप्त नहीं कर सकते। केवल चेतन प्राणी ही वायु से प्राण को ग्रहण कर सकते हैं।

प्रश्न– जब मानव को ईश्वर प्राप्त है, तो उसकी प्राप्ति के लिए कामना क्यों की जाती है। उत्तर– सच्चिदानन्द परमात्मा तो सभी को प्राप्त है, पर 'सत् चित, जीव को उसका आनन्द अप्राप्त है।' जैसे– रसगुल्ला तो मानव को प्राप्त है पर उसका स्वाद कैसा है, नहीं जानता, जब उसे खाता है तभी पता लगता है कि वह कैसा है। इसी प्रकार जब तक मनुष्य ध्यान, धारणा, और साधना नहीं करता तब तक ईश्वरानन्द का बोध उसे नहीं हो सकता। तात्पर्य यह है कि 'सच्चिदानन्दस्वरूप ईश्वर में' 'सत्= प्रकृति से बना यह सारा संसार है।' 'चित्= जीव है' और 'आनन्द ईश्वर है।' जब तक जीव अर्थात् मनुष्य, संसार की तरफ झुका रहेगा तब तक ईश्वरानन्द से वंचित रहेगा, और जब संसार में रहते हुए ईश्वर की तरफ ध्यान देगा तभी योङ्गागों द्वारा वह स्वः स्वर्गरुप आनन्द को प्राप्त करेगा।

प्रश्न– माता–पिता के अनुसार ही गर्भ में शिशु का सर्वांग बनता है, जब जन्म लेकर बालक बड़ा होता है तो उसके मन, बुद्धि= मेधा और चेतना की उपज मस्तिष्क के स्नायु मण्डलों से ही होती है। कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों का सम्बन्ध भी मस्तिष्क के करोड़ों स्नायु कोशिकाओं से लगा रहता है। अतः उन सबका केन्द्र भौतिक मस्तिष्क ही है, आत्मा नहीं। इस विषय में आपका क्या कहना है? उत्तर– अमैथुनी काल में मानव उत्पत्ति के पूर्व, कोई नहीं जानता था कि स्त्री–पुरुष की सांचा किस डिजाइन के अनुसार बनाया जायेगा। किन्तु कोई सर्वज्ञ (परम माता–पिता के समान) अदृश्य में विद्यमान था, तभी तो पंचतत्वों के सूक्ष्म भूतों तथा सूर्य–चन्द्र एवं दो भिन्न शक्तियों के गुणानुसार स्त्री और पुरुष का पहले सूक्ष्म शरीर में आकृति बनाया, उसके पश्चात् अनेक प्रकार के रासायनिक तत्वों एवं सूर्य के प्रकाश से जब हजारों वर्षों में 'रज–वीर्य' जैसे उपादान बन गए तब सूक्ष्म शरीर के साथ आत्माओं के संयोग से, उन दोनों के एकत्रित हो जाने पर अनेक स्त्रीलिंग और पुलिंग के भ्रूण उत्पन्न हो गए और वे भूमि माता की कुक्षी से रस प्राप्त कर पलने लगे, उसके पश्चात् नर और नारी (युवा–युवती) सब तिब्बत के आस–पास विचरने लगे।

इसी विषय को संक्षेप में 'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान' में इस प्रकार लिखा गया है'– 'नर–नारी के संयोग के बिना ही जो शरीर धारण करते हैं उसे अमैथुनी सृष्टि कहते हैं। ईश्वरीय व्यवस्थानुसार 'रज–वीर्य' के मूल तत्वों के किसी विशिष्ठ आवरण में इकट्ठा होने पर देह रचना आरम्भ हो जाती है। कालान्तर में देह परिपक्व हो जाने पर आवरण फट जाते हैं और बने बनाये शरीर बाहर आ जाते हैं। यह ऐश्वरीय सृष्टि कहलाती है। तत्पश्चात् सजातीय प्रजनन का क्रम चालू हो जाता है, और सांचे में ढल–ढल कर नित्य नये शरीर बनने लगते हैं। परमेश्वर ने जीवात्मा को नहीं बनाया, अपितु उनके देह को बनाया।'

अतः स्त्री–पुरुष के विज्ञान संगत शरीर का निर्माण आत्मा के ज्ञातृत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्व के लिए ज्ञान स्वरूप परमात्मा के नियम द्वारा, मस्तिष्क की रचना भी अपने लिए नहीं आत्मा के लिए बना ताकि उसके द्वारा वह सोच–विचार और स्मरण कर सके। माना कि मन, बुद्धि, चेतना स्नायुओं का उपज मस्तिष्क है तो उन साधनों से उनका भोग और सुख–दुःखों का अनुभव कौन करता है? देखिये आम को उत्पन्न करने वाला आम का वृक्ष है, पर उसका भोग (आम नहीं) मनुष्य करता है। इसी प्रकार शरीर में जितने साधन बने हैं वह सब सूक्ष्म शरीर से आत्मा के लिए बने हैं।

– मुकाम पोस्ट– मुरारई, जिला वीरभूम,
पश्चिम बंगाल– 731211 मोबाइल– 08158078011

पर्वों का पुंज : मकर संक्रान्ति

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

हमारे आर्य पूर्वज इस विशाल ब्रह्माण्ड में समय-समय पर होने वाले परिवर्तन का सूक्ष्म-निरीक्षण करते थे। उस परिवर्तन झंझावतों से मानव जाति की रक्षा कर प्रकृति के विभिन्न तत्वों को अपने विकास में सहायक बनाने का प्रयास करते थे। वैदिक ऋचाओं के दृष्टा अपने अनुभवों को वैदिक ऋचाओं द्वारा प्रकट कर प्रकृति से सामञ्जस्य बैठाने का प्रयत्न करते थे। वैदिक आर्यों ने सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि का गहराई से अध्ययन, मनन और चिन्तन किया था। चूंकि ये सभी जड़ हैं, किन्तु परमात्मा के प्रकाश से प्रकाशित रहते हैं।

यजुर्वेद का एक प्रसिद्ध मन्त्र है-

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्ष सूर्य आत्मा जगत स्तस्थुषश्च स्वाहा।

- यजुर्वेद अ. 7 मन्त्र 42

इस सुन्दर और सरल मन्त्र में कहा गया है कि दिव्यगुण युक्त विद्वानों अथवा उपासकों का जीवन व बलरूप तथा अद्भुत रूप वाला वह परमेश्वर, सूर्य का, वायु का तथा अग्नि का मार्ग दर्शक है। यह द्यूलोक, पृथिवी लोक तथा अन्तरिक्ष लोक को प्राप्त हो रहा है। चर अर्थात् प्राणी जगत का, अचर अर्थात् जड़ जगत का आत्मा वही सूर्य सबसे अभिसरणीय अर्थात् प्राप्त करने योग्य है। उसके प्रति हम सर्वस्व का समर्पण करते हैं। सूर्य से अधिकाधिक लाभ लेते हैं। इस प्रकार कारण स्वरूप परमात्मा से प्राप्त यह समस्त प्राकृतिक पदार्थ प्रकाशमान है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार जितने समय में पृथिवी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूर्ण करती है, उस अवधि को एक 'सौर वर्ष' कहते हैं। कुछ लम्बी मृदंग वर्तुलाकार जिस परिधि पर पृथिवी परिभ्रमण करती है, उस परिधि को 'क्रान्तिवृत्त' कहा जाता है। हमारे मनीषियों ने इस क्रांतिवृत्त के 12 भाग कल्पित किए हुए हैं। इन 12 भागों के नाम उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्र पुञ्जों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिए हैं। जैसे 1 मेष, 2. वृषभ, 3. मिथुन, 4. कर्क, 5. सिंह, 6. कन्या, 7. तुला, 8. वृष्चिक, 9. धनु, 10. मकर, 11. कुम्भ, 12. मीन। प्रत्येक भाग अथवा आकृति को राशि कहते हैं। ये सभी राशियां अथवा आकृतियां जड़ हैं, इनका अपना कोई अलग अस्तित्व नहीं है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण (प्रवेश) करती है, तब उसे 'संक्रान्ति' कहा जाता है।

मध्ययुग अथवा पौराणिक युग (4 से 6 शताब्दी ई.) में कतिपय स्वार्थी, धन-लोलुप, 'संस्कृतज्ञ' विद्वानों ने सामाजिक-मानसिकता की कमजोरी का लाभ उठाकर इन नक्षत्रों, ग्रहों आदि छोटे-बड़े पुञ्जों के आधार पर फलित ज्योतिष की कुछ कल्पित बातें गढ़ ली। भृगु-संहिता आदि नाम पर, सुखद दुखद ग्रहों की गपोड़शंसी बातें समाज में प्रचारित कर दी। मुहूर्त चौघड़िया, मंगल, सूतक, पञ्चक आदि की तथ्यहीन तथा बुद्धि विवेक के विरुद्ध तथा तर्क पर न ठहरने वाली बातों का समाज में एक मानसिक भय उत्पन्न करने वाले विचारों का प्रचार कर दिया। जप पुरश्चरण, दान दक्षिणा जिसमें भूमि, द्रव्य सोना, चांदी, पलंग बिस्तर तथा गोदान का प्रचार कर दिया। अनिष्टकारी ग्रहों नक्षत्रों (जड़ पदार्थ) के प्रतिनिधि बनकर संकट ग्रस्त जातक के दुख दूर करने का पाखण्ड फैला दिया। वस्तुतः देखा जाए तो इस राष्ट्र की सभी प्रकार की हानि जितना इन फलित ज्योतिषियों ने की है, उतनी हानि बाहरी आक्रमणकारियों ने भी नहीं की है। फलित ज्योतिष विज्ञान तथा तर्क के आधार पर तथा बुद्धि और विवेक के सम्मुख कहीं नहीं ठहरता। दुर्भाग्य है कि समाचार पत्र-पत्रिकाएं तथा टी. वी. के विभिन्न चैनल जन-साधारण की इसी मानसिक कमजोरी का लाभ उठाकर आर्थिक और व्यापारिक अवसर ढूंढ़ने में लगे हैं। कम से कम पत्रकारिता के पवित्र क्षेत्र को फलित ज्योतिष की कालिमा से दूर रखना चाहिए।

प्रसंगवश, मकर संक्रान्ति की चर्चा चल रही है, अतएव इस सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त है कि दक्षिणायन काल में रात्रियां दीर्घ कालीन और दिन छोटे होते हैं। सूर्य की मकर राशि (10वां क्रम) की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति (4 था क्रम) दक्षिणायन प्रारम्भ हो जाता है। अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर संक्रान्ति का अत्यधिक महत्व है। मकर का सामान्य अर्थ मगर है। जिस प्रकार यूरोप के लोग 25 दिसम्बर को बड़ा दिन मानते हैं। हम भारतीय आर्यगण मकर संक्रान्ति को ही बड़ा दिन मानते हैं। साधारण जन की मान्यता है कि इसी दिन से ही तिल-तिल दिन बढ़ने लगता है। हमारा वर्षारम्भ आग्रहायण से होता है। चान्द्रमास के वर्ष के 10 दिन कम होने पर उसे 'लौंदमास' के द्वारा सौर मास के वर्षों में बराबर किया जाता रहा है। उल्लेखनीय है कि ज्योतिष के ये सूक्ष्म सूत्र सर्वप्रथम आर्यों ने ही किए हैं। वैदिक साहित्य में ज्योतिष ज्योति शास्त्र को वेद पुरुष का नाम 'ज्योतिषं नैनं प्रोक्तम्' कहा गया है।

यजुर्वेद के अध्याय 30, मन्त्र 15 के अनुसार 60 संवत्सरों में 5-5 के 12 युग होते हैं। वर्णित प्रत्येक युग में क्रम से संवत्सर, परिवत्सर, इच्छावत्सर, अनुवत्सर और इद्वत्सर ये 5 संज्ञाएं हैं। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कहा जाता है कि रोमन लोग 10 माह का वर्ष मानते थे। ज्यूलियस सीजर ने भारतीय ज्योतिष से प्रभावित होकर अपने वर्षों में परिवर्तन कर 10 माहों के स्थान पर 12 महीने किए। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि रोम निवासियों पर भारतीय ज्योतिष का बहुत प्रभाव था। ज्यूलियस सीजर ने जुलाई अपने नाम पर तथा 'अगस्त' अपने काका 'ऑगस्टस' के नामानुसार रख दिया।

मुसलमान आज भी चान्द्रमासों को मानकर पिछड़े हुए हैं। यदि ये भी हिन्दू ज्योतिष से मिलकर कार्य करें तो इनकी ईद के चांद की अनिश्चितता की कठिनाई दूर हो सकती है। किन्तु यह सब गुण ग्राहकता पर निर्भर करता है।

मकर संक्रान्ति पर्व कृषक प्रिय त्यौहार है। कहा जाता है कि तक्षशिला में खगोल शास्त्रीगण 'लोई' शब्द से भली-भांति परिचित थे इसका सम्बन्ध सीधे सूर्य से ही रखा गया है। लोई शब्द का सामान्य अर्थ 'गरमाहट' है। हमारे पंजाब-हरियाणा के कृषक को गर्मी अधिक प्रिय है। गर्मी (उष्णता) से फसल अच्छी और खूब पकती है। यही कारण है कि मकर सौर संक्रांति पर कृषक बहुत खुश होते हैं। मकर संक्रांति से सभी लोग अपना व्यापारादि प्रारम्भ करते हैं और मैदानों में आना जाना प्रारम्भ कर देते हैं। इस क्षेत्र में जिस व्यक्ति के यहां गत वर्ष कोई शुभ कार्य जैसे विवाह, सन्तानोत्पत्ति आदि हुआ हो, वह आज रात्रि को होली जलाता है। अपने सगे- सम्बन्धियों तथा इष्ट मित्रों में यह पर्व मनाकर मिठाई आदि वितरण करते हैं।

भारतीय दर्शन में उत्तरायण काल तथा मृत्यु का गजब सह-सम्बन्ध माना गया है। कहते हैं, उत्तरायणकाल में दिवंगत की आत्मा पुनर्जन्म ग्रहण नहीं करती। किन्तु यह वैदिक सिद्धान्त नहीं है।

इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों में इस पर्व को अपनी मान्यता और श्रद्धा के अनुसार मनाते हैं। कहीं पोंगल (दक्षिण भारत) तथा माघ बीहू पूर्वोत्तर भारत (असम आदि) में मनाया जाता है। इन्हीं दिनों गंगा सागर (पं. बंगाल) में लाखों श्रद्धालु स्नान कर अपने को पुण्य भागी मानते हैं। पोंगल पर्व से तमिल का नया वर्ष प्रारम्भ होता है। इसे बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। हमारे यहां धार्मिक मान्यता है कि 'सारे तीर्थ बारम्बार, गंगा सागर एक बार।' जहां तक माघ बीहू का सम्बन्ध है, असम में यह धान कटाई का पर्व होता है। यहां होली की तरह 'जी' जलाकर पूजन किया जाता है। असम वासियों में मान्यता है कि 'जी' जलाने (अग्नि) के साथ ही सारे पापों और बुराईयों का नाश हो जाता है। पोगल का अर्थ 'खीर' होता है। केरल के क्षेत्रों में भगवान 'अयप्पा' का प्रख्यात मन्दिर है और यह बड़ा भारी आराधना केन्द्र है। कहा जाता है कि इस दिन कुछ क्षणों के लिए मन्दिर के निकट पहाड़ियों में आग की लपटें उठती दिखाई पड़ती हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से इस शीत प्रधान अवसर पर तिल, तुलं च ताम्बल, तरुणीतृप्त भोजनम् हिमन्ते न सेवन्ते ते नरा मन्द भागिनम्। तिल, रूई, गुड़ तथा सफल गृहस्थ जीवन द्वारा इसका लाभ उठाना चाहिए।

- 'सुकिरण' अ/13, सुदामा नगर
इन्दौर (मध्य प्रदेश)

कीरतपुर, बिजनौर के यज्ञप्रेमी ऋषिभक्त धर्मात्मा दीपचन्द आर्य नहीं रहे

अपने पवित्र जीवन व सद्कर्मों से आर्य समाज का नाम और उसके यश को बढ़ाने वाले यज्ञप्रेमी, ऋषिभक्त धर्मात्मा श्री दीपचन्द आर्य का अपनी कर्मभूमि कीरतपुर, बिजनौर, उ. प्र. में 19 दिसम्बर, 2018 को निधन हो गया। आप 91 वर्ष के थे।

महात्मा दीपचन्द आर्य जी ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज और वैदिक सिद्धान्तों के अनन्य भक्त व निष्ठावान अनुयायी होने के साथ उन पर चलने वाले थे। आपने वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार पवित्र जीवन तो जीया ही, इसके साथ ही आपने व्यापार में सफलता प्राप्त कर अपने पुरुषार्थ से अर्जित आय से आर्यसमाज की संस्थाओं गुरुकुल नजीबाबाद, वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक, वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून सहित अनेक आर्यसमाजों व शिक्षण संस्थाओं को दान आदि देकर उनका पोषण भी किया है।

ऋषिभक्त दीपचन्द आर्य जी के नाम से प्रसिद्ध इस यज्ञ व धर्म प्रेमी पवित्र आत्मा का जन्म 17 मई, 1927 को हरयाणा के जीन्द जिले के एक गांव मिर्चपुर में हुआ था। आप आर्यसमाज और ऋषिभक्त विद्वान महात्मा प्रभु आश्रित जी के सम्पर्क में आये जिन्होंने यज्ञ व अग्निहोत्र सहित गायत्री जप आदि कार्यों में आपकी रुचि व प्रवृत्ति उत्पन्न की। आपने वैदिक सिद्धान्तों सहित वैदिक मर्यादाओं का पालन करते हुए गृहस्थ जीवन बिताया और आध्यात्मिक एवं भौतिक सभी प्रकार की सफलतायें प्राप्त करने के साथ प्रभूत यश व कीर्ति भी अर्जित की।

श्री आर्य में यज्ञों के प्रति गहरी श्रद्धा व निष्ठा थी। आप यज्ञ के लिये अपना सर्वस्व समर्पित करने की भावना रखते थे। यज्ञ की तुलना में अन्य कार्यों को आप अधिक महत्व नहीं देते थे। यज्ञों के प्रति आपकी गहरी भावना का ही परिणाम हैं कि आपने 100 बार सामवेद पारायण यज्ञ, 100 बार यजुर्वेद पारायण यज्ञ और 14 बार चतुर्वेद पारायण यज्ञ किये। यह कार्य कोई छोटा कार्य नहीं है। इससे आपकी वैदिक धर्म ओर उसमें विधेय यज्ञों के प्रति गहरी आस्था, निष्ठा व भावना का परिचय मिलता है।

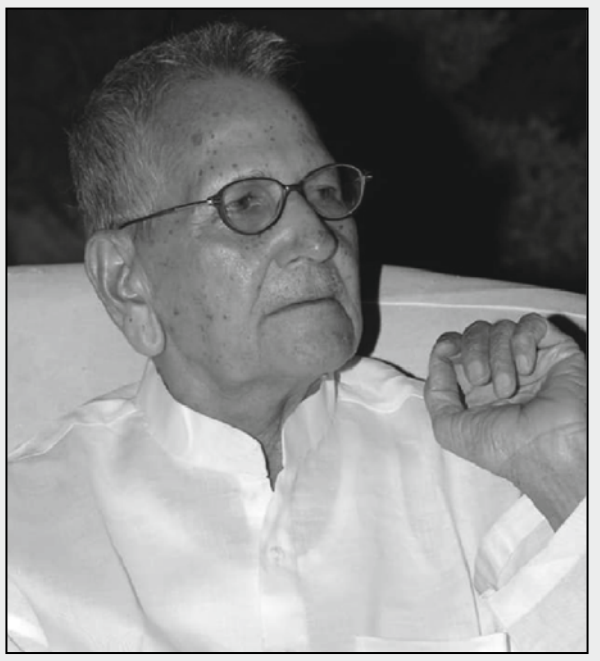

आपका जीवन अध्यात्म के क्षेत्र में असम्भव को सम्भव करने का एक महनीय उदाहरण है। धन्य हैं ऋषि दयानन्द और महात्मा प्रभु आश्रित जी जिनकी प्रेरणा से आपने इतने महान कार्यों का अपने जीवन में सम्पादन किया। आप भले ही वानप्रस्थी व संन्यासी न बने हों परन्तु भाव व स्वभाव से तो आप संयस्त स्वभाव व भावना के धनी ही सिद्ध होते हैं।

आपने कुछ आर्य संस्थाओं के अनेक उत्तरदायित्वों का भी वहन किया है। आप वर्तमान में वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक के अधिष्ठाता थे। यह आश्रम अध्यात्म के अनेक अनुष्ठान और वेद पारायण महायज्ञ आदि आयोजित करता रहता है। आप आर्ष कन्या गुरुकुल विद्यापीठ, श्रवणपुर–नजीबाबाद के भी वर्षों तक प्रधान रहे।

महात्मा दीपचन्द आर्य जी के तीन पुत्र एवं चार पुत्रियां हैं। पुत्र श्री विजय कुमार गोयल, श्री सुन्दर गोयल एवं श्री महेश कुमार गोयल हैं तथा पुत्रियां श्रीमती उमादेवी जी (स्वर्गीय), श्रीमती सन्तोष अग्रवाल, श्रीमती शशि अग्रवाल एवं श्रीमती सविता अग्रवाल हैं। आपके पौत्रों में श्री मेहुल गोयल एवं श्री वरुण गोयल सहित तीन पौत्रियां वर्णिका जी, अक्षरा जी एवं वसुधा जी हैं। आपके कनिष्ठ पुत्र श्री महेश कुमार गोयल जी की धर्मपत्नी आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं नेता महात्मा प्रेमभिक्षु जी, मथुरा की पौत्री हैं।

श्री दीपचन्द आर्य के निधन का समाचार सुनकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि महात्मा दीपचन्द आर्य जी के निधन से ऋषि दयानन्द और यज्ञों का एक दीवाना कम हो गया है। उन्होंने उनके परिवारजनों के प्रति अपनी सांत्वना व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति तथा दुःखी परिवार को इस दुःख से मुक्त करने की प्रार्थना की।

पृष्ठ 1 का शेष

प्रसिद्ध राष्ट्रवादी आर्यनेता श्री प्रकाशवीर शास्त्री

बन सकता है। स्वामी जी ने राजनीति में शुचिता के महत्व को समझाते हुए बताया कि प्राचीन भारतवर्ष में प्रधानमंत्री और राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित चाणक्य ने जो अनुकरणीय उदाहरण स्थापित किये थे। वे आज के राजनेताओं को भी अपने सार्वजनिक जीवन में अपनाने चाहिए।

साहित्य रत्न डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' ने श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी के साथ बिताये अपने समय के संस्मरण साझा किये। उन्होंने बताया कि उनका उपनाम 'अरुण' पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी द्वारा दिया हुआ है।

दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष और पूर्व शिक्षामंत्री डॉ. योगानन्द शास्त्री जी ने पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी की सादगी एवं व्यवहार कुशलता को उनके जीवन का एक महत्त्वपूर्ण गुण बताते हुए कहा कि शास्त्री जी की सादगी कठोर से कठोर व्यक्ति को भी पिघला देती थी। वे गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से निकले एक सच्चे राष्ट्रभक्त एवं राष्ट्रवादी नेता थे।

प्रखर पत्रकार एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के लेखक व विद्वान् डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि उन्हें बचपन से ही शास्त्री जी का स्नेह मिला और जब वे पढ़ने के लिए दिल्ली आये तो शास्त्री जी ही उनके अभिभावक बने। डॉ. वैदिक ने अपने पी.एच.डी. के शोधग्रन्थ को हिन्दी में लिखे जाने के कारण स्वीकार न करने तथा आन्दोलन करने पर कॉलेज से निकाले जाने का विवरण सुनाते हुए कहा कि पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी व उनके अन्य सहयोगियों द्वारा संसद में इस विषय को उठाये जाने से जो हंगामा मचा उसके परिणामस्वरूप उनका शोधग्रन्थ हिन्दी में स्वीकृत हुआ और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किये गये हिन्दी के शोधग्रन्थ स्वीकृत होने लगे। यह एक ऐतिहासिक निर्णय जे.एन.यू. में पहली बार लिया गया जिसका सारा श्रेय पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी को जाता है। डॉ. वैदिक जी ने सामाजिक संस्थाओं का आह्वान किया कि वे आगे आयें और भटकाव की स्थिति में देश का मार्गदर्शन करें। उन्होंने कहा कि राजनैतिक पार्टियाँ व्यवस्था परिवर्तन करने के लिए सक्षम सिद्ध नहीं हो रही हैं। राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठा. विक्रम सिंह जी ने अपने संस्मरण सांझा करते हुए कहा कि शास्त्री जी बचपन से ही उनके आदर्श रहे हैं।

लोकसभा के पूर्व महासचिव एवं संविधान विशेषज्ञ

श्री सुभाष कश्यप जी ने लोकसभा में पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी की वाणी के जादू का प्रभाव एवं सभी दलों के नेताओं द्वारा उन्हें दिये जाने वाले सम्मान के सम्बन्ध में विवरण देते हुए बताया कि जब शास्त्री जी लोकसभा में बोलते थे तो सत्ता पक्ष एवं विपक्ष उनका भाषण सुनने के लिए एकदम से शान्त हो जाते थे। उन्होंने वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या जातिवाद को बताया। उन्होंने कहा कि आज वोटर भी जाति देखकर ही वोट देता है, उम्मीदवार की योग्यता से नहीं। उन्होंने श्री शरद त्यागी जी के स्वागत भाषण की प्रशस्ति करते हुए कहा कि इसको एक लेख के रूप में छपवाना चाहिए, क्योंकि यह लेख वर्तमान समय में देश के समक्ष एकता और अखण्डता की चुनौतियों का सही आंकलन और समाधान प्रस्तुत करता है। अन्त में गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने स्व. प्रकाशवीर शास्त्री जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी अपनी हाजिर जवाबी से कठिन से कठिन विवादों को सरलता से सुलझा दिया करते थे।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि जब हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए संसद में मंथन चल रहा था तब दो विचारों पर बहस हो रही थी। उनमें एक उर्दू मिश्रित हिन्दी और दूसरी संस्कृत मिश्रित हिन्दी थी। विचार–विमर्श में बहस चल रही थी कि इनमें से कौन सी हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में लागू की जाये। तब पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि मैं हिन्दी का विद्वान् नहीं हूँ और मैंने हिन्दी पढ़ी भी नहीं है। मुझे तो वह हिन्दी चाहिए जो प्रकाशवीर शास्त्री बोलते हैं।

इस कार्यक्रम में सर्वश्री प्रेमपाल शास्त्री, श्री अनिल आर्य, डॉ. संजय त्यागी डीन, मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, श्री प्रदीप त्यागी पूर्व आयकर कमिश्नर्स, श्री हुक्मचन्द तिवारी पूर्व विधायक मथुरा, श्री अनिल गुलाटी आई.ए.एस., श्री गुरुचरण बिन्दल, श्री ज्ञानेन्द्र कुमार गांधी–मुरादाबाद, श्री यशपाल शास्त्री, डॉ. सत्यवीर त्यागी, श्री महेन्द्र भाई, श्री राम कुमार, श्री बाबूराम शर्मा आदि महानुभावों के अतिरिक्त आर्य समाज और दिल्ली, गाजियाबाद, बिजनौर आदि स्थानों से त्यागी समाज की गणमान्य विभूतियाँ उपस्थित थीं। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। पूरे कार्यक्रम का संचालन श्री सुयश गुप्ता जी ने बड़ी ही कुशलता के साथ किया।

आर्य समाज, सैक्टर–19, फरीदाबाद के संस्थापक तथा पूर्व प्रधान

बाबू श्री लक्ष्मीचन्द जी का आकस्मिक निधन

आर्य समाज, सैक्टर–19, फरीदाबाद के संस्थापक सदस्य एवं पूर्व प्रधान तथा आर्य समाज के बहुत ही सुलझे हुए, कर्मठ कार्यकर्ता बाबू लक्ष्मीचन्द जी का विगत दिनों आकस्मिक निधन हो गया है। श्री लक्ष्मीचन्द जी का प्रभावशाली व्यक्तित्व बहुत ही स्नेहमयी था और उन्होंने अपनी ओर से पलवल में बड़े–बड़े आर्य समाज के आयोजनों में विशेष भूमिका निभाई। स्वामी इन्द्रवेश जी ने जब आर्य सभा का गठन किया उसमें भी इन्होंने बढ़–चढ़कर सहयोग प्रदान किया, उसके पश्चात् सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों में उनका आर्थिक तथा जनसहयोग के रूप में विशेष स्नेह एवं उत्साहपूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहा। श्री लक्ष्मीचन्द जी सदैव आर्य समाज के कार्यों के लिए उत्साहित रहते थे तथा नवयुवकों में आर्य समाज के प्रति निष्ठा पैदा करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री लक्ष्मीचन्द जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि उनके निधन से आर्य समाज का एक स्तम्भ ढह गया है। उनके निधन से मुझे अत्यधिक रूप से व्यक्तिगत क्षति पहुँची है। स्वामी जी ने बताया कि श्री लक्ष्मीचन्द जी से मेरा सम्पर्क तभी से बना हुआ था जब वह पलवल में नौकरी कर रहे थे। वे अत्यन्त मिलनसार तथा आर्य समाज के लिए समर्पित व्यक्ति थे। उनका साथ पाकर मुझे कभी भी पलवल, फरीदाबाद के क्षेत्र में आर्य समाज के किसी भी आयोजन को करने में किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। उनका व्यक्तिगत रूप में मार्ग दर्शन एवं सुझावों से हमें बहुत ही अच्छा सहयोग मिलता रहता था जिससे सामाजिक कार्य करने में किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता था। ऐसे कुशल अधिकारी एवं कार्यकर्ता का हम सबके बीच से चला जाना आर्य समाज एवं समूचे आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति है। उनके निधन पर हम आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति के साथ पारिवारिकजनों को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। बाबू लक्ष्मीचन्द जी के प्रति हम सबकी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके द्वारा आर्य समाज संगठन के उत्थान के कार्यों को करने में उनकी अनुपस्थिति में जो अभाव आयेगा उसकी पूर्ति उनके द्वारा छोड़े हुए कार्यों को आगे बढ़ाने में हम सभी तत्पर होकर करें। स्वामी जी ने कहा कि बाबू लक्ष्मीचन्द जी के साथ मिलकर आर्य समाज के उत्थान के लिए समय–समय पर जो कार्य किये हैं वह सदैव स्मरणीय रहेंगे।

स्वास्थ्य, सौहार्द एवं प्रसन्नता के लिए "आध्यात्मिक शिक्षा एवं वैश्विक मानव मूल्य" विषय पर आयोजित

कार्यशाला में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ मुख्य उद्बोधन

2 जनवरी, 2019 को स्वामी आर्यवेश जी ने किया कार्यशाला का उद्घाटन

गत् 2 से 8 जनवरी, 2019 तक चौ. रणवीर सिंह विश्वविद्यालय जीन्द में विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन 2 जनवरी, 2019 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। कार्यशाला में भाषण का मुख्य विषय व्यक्ति के जीवन में स्वास्थ्य, सौहार्द एवं प्रसन्नता के लिए आध्यात्मिक शिक्षा एवं वैश्विक मानव मूल्य रखा गया था। स्वामी जी के अतिरिक्त इस उद्घाटन सत्र में देश के प्रतिष्ठित लेखक एवं शिक्षाविद् डॉ. जे. एस. राजपूत पूर्व अध्यक्ष एन.सी.ई.आर. टी. भी अपने विचार रखने के लिए दिल्ली से पधारे हुए थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रणवीर सिंह सोलंकी ने की तथा संयोजन विश्वविद्यालय के डीन प्रो. एस.के. सिन्हा ने किया। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. राजवीर सिंह मोर भी इस अवसर पर मंच पर विराजमान थे। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के सभी प्राध्यापक एवं प्रशासनिक अधिकारी भाग ले रहे थे। विशेष बात यह है कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोलंकी जी की पहल पर विश्वविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों एवं अधिकारियों को वैश्विक मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा विषय पर विस्तृत ज्ञान एवं प्रशिक्षण देने के लिए इस कार्यशाला का आयोजन किया गया था। जीन्द विश्वविद्यालय पहला संस्थान है जहाँ ऐसे महत्त्वाकांक्षी एवं प्रभावशाली कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने अष्टांग योग के पहले तथा दूसरे अंग यम–नियमों को वैश्विक नैतिक मूल्य बताते हुए कहा कि यम–नियमों में दिये गये 10 सिद्धान्त मानव मात्र के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। इन सिद्धान्तों का किसी भी वर्ग, सम्प्रदाय या राष्ट्र द्वारा विरोध नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इन सिद्धान्तों में किसी भी प्रकार की संकीर्णता नहीं है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह ये पांच सिद्धान्त यम कहलाते हैं और संसार के अन्य लोगों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए यह इन सिद्धान्तों में दर्शाया गया है। इसी प्रकार शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान ये पांच नियम कहलाते हैं और इनमें अपने लिए मनुष्य को कैसा व्यवहार करना चाहिए यह बतलाया गया है। यम–नियमों के पालन करने से मनुष्य बाह्य एवं अभ्यांतर रूप से आध्यात्मिक उन्नति एवं मानवीय गुणों से सम्पन्न हो जाता है और जिस मनुष्य के जीवन में यम–नियम व्यवहारिक रूप ले लेते हैं उस मनुष्य को न केवल आत्मिक शांति एवं प्रसन्नता ही प्राप्त होती है, बल्कि आत्मिक शांति से उत्तम स्वास्थ्य और आध्यात्मिक उन्नति से मानव, मानव के प्रति सौहार्द उसके स्वभाव का अंग बन जाते हैं। इस प्रकार यदि पूरे विश्व में सम्पूर्ण मानव परिवार को एक सूत्र में पिरोना है तो समस्त मत, सम्प्रदायों एवं धार्मिक कर्मकाण्डों से ऊपर उठकर यम, नियमों को प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक बना दिया जाये तो वर्तमान समय में विभिन्न संकीर्णताओं में बंटा हुआ मानव समाज एक परिवार के रूप में विकसित हो सकता है।

इस अवसर पर डॉ. जे.एस. राजपूत ने एक शिक्षक को कैसे अपने जीवन में नैतिकता अपनाकर अपने विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा देनी चाहिए और व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता अपनाकर सामाजिक जीवन में नैतिकता को प्रसारित एवं प्रचारित करना चाहिए आदि विषयों पर अत्यन्त सारगर्भित व्याख्यान दिया। विश्वविद्यालय के कुलपति एवं रजिस्ट्रार महोदय ने दोनों विद्वान् वक्ताओं का हार्दिक धन्यवाद देकर उनसे आग्रह किया कि वे समय–समय पर विश्वविद्यालय में पधारकर अपने विद्वतापूर्ण विचारों तथा अनुभवों से उन्हें अनुगृहीत करते रहें।

सिरसा के प्रसिद्ध बाल रोग विशेषज्ञ एवं समाजसेवी डॉ. जे.एल. खुराना की

श्रद्धांजलि सभा को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया सम्बोधित

लगभग तीन हजार लोगों ने श्रद्धांजलि सभा में लिया भाग

सिरसा (हरियाणा) के प्रसिद्ध बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. जवाहर लाल खुराना का गत् दिनों देहावसान हो जाने पर 3 जनवरी, 2019 को उनकी स्मृति में विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन झुंथरा वाटिका के विशाल प्रांगण में किया गया। इस श्रद्धांजलि सभा में नगर के तथा विभिन्न स्थानों से पधारे लगभग 3 हजार लोगों ने भाग लिया। इस विशाल श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करने तथा आध्यात्मिक प्रवचन देने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर शांति यज्ञ को सम्पन्न कराने के लिए केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री महेन्द्र भाई जी पधारे तथा उन्होंने अपनी विद्वतापूर्णशैली में शांति यज्ञ को सम्पन्न कराया।

विदित हो कि डॉ. जवाहर लाल खुराना दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य सामाजिक कार्यकर्ता, सूरजमल बिहार आर्य समाज के प्रधान तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के उपाध्यक्ष श्री यशोवीर आर्य के बहनोई थे वे एक प्रतिष्ठित समाजसेवी एवं प्रसिद्ध बाल रोग चिकित्सक के रूप में सिरसा नगर में विख्यात थे। रोगियों की वे निःशुल्क चिकित्सा भी करते थे और उसी के कारण उनकी ख्याति जन–जन की जुबान पर बनी हुई थी। डॉ. खुराना का अनुभव एवं उनका ज्ञान इतना ऊँचा था कि वे रोगी बच्चे को हाथ लगाते ही रोग को पहचान लेते थे और उनकी चिकित्सा से बच्चों को अतिशीघ्र चमत्कारिक रूप से लाभ प्राप्त हो जाता था। ऐसे धार्मिक, परोपकारी एवं समाजसेवी डॉक्टर के निधन का हजारों लोगों को अत्यन्त दुःख एवं शोक बना हुआ था।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचन के द्वारा मृत्यु के दुःख से निवृत्त होने तथा जीवन के रहस्य को समझने के लिए अनेक उदाहरण एवं दृष्टान्त प्रस्तुत करके शोक संतप्त परिवार एवं समाज का मार्ग दर्शन किया। स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचन से अनेक लोगों ने जीवन में परोपकार एवं धार्मिक कार्य करने का संकल्प भी लिया। स्वामी जी ने डॉ. जवाहर लाल खुराना की धर्मपत्नी श्रीमती मदालसा खुराना, उनके सुपुत्र डॉ. आशीष खुराना एवं डॉ. अभिषेक खुराना तथा श्री यशोवीर आर्य सहित समस्त परिवारजनों, सम्बन्धीजनों एवं शुभचिन्तकों को सभा की ओर से सांत्वना देकर डॉ. जे.एल. खुराना के पद्चिन्हों पर चलने का संकल्प दिलाया।

स्वामी जी के साथ श्रद्धांजलि सभा में ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री ऋषिराज शास्त्री, ब्र. रामफल आर्य, आर्य समाज सिरसा के प्रधान श्री भूप सिंह, मंत्री श्री भीष्म शास्त्री, संरक्षक श्री जगदीश सींवर, पूर्व मंत्री श्री इन्द्रपाल आर्य, श्री परमजीत शास्त्री कन्या गुरुकुल डोभी, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री आर.एस. सांगवान आदि भी सम्मिलित हुए।

खो रहा है बचपन

–आकांक्षा यादव

पण्डित नेहरू से मिलने एक व्यक्ति आये। बातचीत के दौरान उन्होंने पूछा– ''पंडित जी आप 70 साल के हो गये हैं लेकिन फिर भी हमेशा गुलाब की तरह तरोताजा दिखते हैं। जबकि मैं उम्र में आपसे छोटा होते हुए भी बूढ़ा दिखता हूँ।'' इस पर हँसते हुए नेहरू जी ने कहा–''इसके पीछे तीन कारण हैं।'' उस व्यक्ति ने आश्चर्यमिश्रित उत्सुकता से पूछा, वह क्या? नेहरू जी बोले–''पहला कारण तो यह है कि मैं बच्चों को बहुत प्यार करता हूँ। उनके साथ खेलने की कोशिश करता हूँ, जिससे मुझे लगता है कि मैं भी उनके जैसा हूँ। दूसरा कि मैं प्रकृति प्रेमी हूँ और पेड़–पौधों, पक्षी, पहाड़, नदी, झरना, चाँद, सितारे सभी से मेरा एक अटूट रिश्ता है। मैं इनके साथ जीता हूँ और ये मुझे तरोताजा रखते हैं।'' नेहरू जी ने तीसरा कारण दुनियादारी और उसमें अपने नजरिये को बताया–''दरअसल अधिकतर लोग सदैव छोटी–छोटी बातों में उलझे रहते हैं और उसी के बारे में सोचकर अपना दिमाग खराब कर लेते हैं। पर इन सबसे मेरा नजरिया बिल्कुल अलग है और छोटी–छोटी बातों का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता।'' इसके बाद नेहरू जी खुलकर बच्चों की तरह हँस पड़े। यहाँ बचपन की महत्ता को दर्शाती किसी गीतकार द्वारा लिखी गई पंक्तियाँ याद आती हैं –

ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो,
भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी।
मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन,
वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी।।

बचपन एक ऐसी अवस्था होती है, जहाँ जाति–धर्म–क्षेत्र कोई मायने नहीं रखते। बच्चे ही राष्ट्र की आत्मा हैं और इन्हीं पर अतीत को सहेज कर रखने की जिम्मेदारी भी है। बच्चों में ही राष्ट्र का वर्तमान रुख करवटें लेता है तो इन्हीं में भविष्य के अदृश्य बीज बोकर राष्ट्र को पल्लवित–पुष्पित किया जा सकता है। दुर्भाग्यवश अपने देश में इन्हीं बच्चों के शोषण की घटनाएँ नित्य–प्रतिदिन की बात हो गयी हैं और इसे हम नंगी आँखों से देखते हुए भी झुठलाना चाहते हैं– फिर चाहे वह निठारी कांड हो, स्कूलों में अध्यापकों द्वारा बच्चों को मारना–पीटना हो, बच्चियों का यौन शोषण हो या अनुसूचित जाति व जनजाति से जुड़े बच्चों का स्कूल में जातिगत शोषण हो। हाल ही में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की ओर से नई दिल्ली में आयोजित प्रतियोगिता के दौरान कई बच्चों ने बच्चों को पकड़ने वाले दैत्य, बच्चे खाने वाली चुड़ैल और बच्चे चुराने वाली औरत इत्यादि को अपने कार्टून एवं पेन्टिंग्स का आधार बनाया। यह दर्शाता है कि बच्चों के मनोमस्तिष्क पर किस प्रकार उनके साथ हुये दुर्व्यवहार दर्ज हैं, और उन्हें भय में खौफनाक यादों के साथ जीने को मजबूर कर रहे हैं।यहाँ सवाल सिर्फ बाहरी व्यक्तियों द्वारा बच्चों के शोषण का नहीं है बल्कि घरेलू रिश्तेदारों द्वारा भी बच्चों का खुलेआम शोषण किया जाता है। हाल ही में केन्द्र सरकार की ओर से बाल शोषण पर कराये गये प्रथम राष्ट्रीय अध्ययन पर गौर करें तो 53.22 प्रतिशत बच्चों को एक या उससे ज्यादा बार यौन शोषण का शिकार होना पड़ा, जिनमें 53 प्रतिशत लड़के और 47 प्रतिशत लड़कियाँ हैं। 22 प्रतिशत बच्चों ने अपने साथ गम्भीर किस्म और 51 प्रतिशत ने दूसरे तरह के यौन शोषण की बात स्वीकारी तो 6 प्रतिशत को जबरदस्ती यौनाचार के लिये मारा–पीटा भी गया। सबसे आश्चर्यजनक पहलू यह रहा कि यौन शोषण करने वालों में 50 प्रतिशत नजदीकी रिश्तेदार या मित्र थे। शारीरिक शोषण के अलावा मानसिक व उपेक्षापूर्ण शोषण के तथ्य भी अध्ययन के दौरान उभरकर आये। हर दूसरे बच्चे ने मानसिक शोषण की बात स्वीकारी, जहाँ 83 प्रतिशत जिम्मेदार माँ–बाप ही होते हैं। निश्चिततः यह स्थिति भयावह है। एक सभ्य समाज में बच्चों के साथ इस प्रकार की स्थिति को उचित नहीं ठहराया जा सकता।

बालश्रम की बात करें तो आधिकारिक आँकड़ों के मुताबिक भारत में फिलहाल लगभग 5 करोड़ बाल श्रमिक हैं। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने भी भारत में सर्वाधिक बाल श्रमिक होने पर चिन्ता व्यक्त की है। ऐसे बच्चे कहीं बाल–वेश्यावृत्ति में झोंके गये हैं या खतरनाक उद्योगों या सड़क के किनारे किसी ढाबे में जूठे बर्तन धो रहे होते हैं या धार्मिक स्थलों व चौराहों पर भीख माँगते नजर आते हैं अथवा साहब लोगों के घरों में दासता का जीवन जी रहे होते हैं। सरकार ने सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा बच्चों को घरेलू बाल मजदूर के रूप में काम पर लगाने के विरुद्ध एक निषेधाज्ञा भी जारी की पर दुर्भाग्य से सरकारी अधिकारी, कर्मचारी, नेतागण व बुद्धिजीवी समाज के लोग ही इन कानूनों का मखौल उड़ा रहे हैं। अकेले वर्ष 2006 में देश भर में करीब 26 लाख बच्चे घरों या अन्य व्यावसायिक केन्द्रों में बतौर नौकर काम कर रहे थे। गौरतलब है कि अधिकतर स्वयंसेवी संस्थायें या पुलिस खतरनाक उद्योगों में कार्य कर रहे बच्चों को मुक्त तो करा लेती हैं पर उसके बाद उनकी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेती हैं। नतीजतन, ऐसे बच्चे किसी रोजगार या उचित पुनर्वास के अभाव में पुनः उसी दलदल में या अपराधियों की शरण में जाने को मजबूर होते हैं।

ऐसा नहीं है कि बच्चों के लिये संविधान में विशिष्ट उपबन्ध नहीं हैं। संविधान के अनुच्छेद 15(3) में बालकों के लिये विशेष उपबन्ध करने हेतु सरकार को शक्तियाँ प्रदत्त की गयी हैं। अनुच्छेद 23 बालकों के दुर्व्यापार और बेगार तथा इसी प्रकार का अन्य बलात्श्रम को प्रतिषिद्ध करता है। इसके तहत सरकार का कर्त्तव्य केवल बन्धुआ मजदूरों को मुक्त कराना ही नहीं वरन् उनके पुनर्वास की उचित व्यवस्था भी करना है। अनुच्छेद 24 चौदह वर्ष से कम उम्र के बालकों के कारखानों या किसी परिसंकटमय नियोजन में लगाने का प्रतिषेध करता है। यही नहीं नीति निदेशक तत्वों में अनुच्छेद 39 में स्पष्ट उल्लिखित है कि बालकों की सुकुमार अवस्था का दुरुपयोग न हो और आर्थिक आवश्यकता से विवश होकर उन्हें ऐसे रोजगारों में न जाना पड़े जो उनकी आयु या शक्ति के अनुकूल न हों। इसी प्रकार बालकों को स्वतंत्र और गरिमामय वातावरण में स्वस्थ विकास के अवसर और सुविधायें दी जायें और बालकों की शोषण से तथा नैतिक व आर्थिक परित्याग से रक्षा की जाय। संविधान का अनुच्छेद 45 आरम्भिक शिशुत्व देखरेख तथा 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिये शिक्षा हेतु उपबन्ध करता है। इसी प्रकार मूल कर्त्तव्यों में अनुच्छेद 51 (क) में 86वें संशोधन द्वारा वर्ष 2002 में नया खंड (ट) अंतःस्थापित करते हुये कहा गया कि जो माता–पिता या संरक्षक हैं, 6 से 14 वर्ष के मध्य आयु के अपने बच्चों या, यथा – स्थिति अपने पाल्य को शिक्षा का अवसर प्रदान करें। संविधान के इन उपबन्धों एवं बच्चों के समग्र विकास को वांछित गति प्रदान करने के लिये 1985 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन महिला और बाल विकास विभाग गठित किया गया। बच्चों के अधिकारों और समाज के प्रति उनके कर्त्तव्यों का उल्लेख करते हुए 9 फरवरी 2004 को 'राष्ट्रीय बाल घोषणा पत्र' को राजपत्र में अधिसूचित किया गया, जिसका उद्देश्य बच्चों को जीवन जीने, स्वास्थ्य देखभाल, पोषाहार, जीवन स्तर, शिक्षा और शोषण से मुक्ति के अधिकार सुनिश्चित कराना है। यह घोषणापत्र बच्चों के अधिकारों के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय समझौते (1989) के अनुरूप है, जिस पर भारत ने भी हस्ताक्षर किये हैं। यही नहीं हर वर्ष 14 नवम्बर को नेहरू जयन्ती को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मुसीबत में फँसे बच्चों हेतु चाइल्ड हेल्प लाइन–1908 की शुरुआत की गई है। 18 वर्ष तक के जरूरतमन्द बच्चे या फिर उनके शुभ चिन्तक इस हेल्प लाइन पर फोन करके मुसीबत में फँसे बच्चों को तुरन्त मदद दिला सकते हैं। यह हेल्प लाइन उन बच्चों की भी मदद करती है जो बालश्रम के शिकार हैं। हाल ही में भारत सरकार द्वारा 23 फरवरी 2007 को 'बाल आयोग' का गठन भी किया गया है। बाल आयोग बनाने के पीछे बच्चों को आतंकवाद, साम्प्रदायिक दंगों, उत्पीड़न, घरेलू हिंसा अश्लील साहित्य व वेश्यावृत्ति, एड्स, हिंसा, अवैध व्यापार व प्राकृतिक विपदा से बचाने जैसे उद्देश्य निहित हैं। बाल आयोग, बाल अधिकारों से जुड़े किसी भी मामले की जाँच कर सकता है और ऐसे मामलों में उचित कार्यवाही करने हेतु राज्य सरकार या पुलिस को निर्देश दे सकता है। इतने संवैधानिक उपबन्धों, नियमों–कानूनों, संधियों और आयोगों के बावजूद यदि बच्चों के अधिकारों का हनन हो रहा है, तो कहीं न कहीं इसके लिये समाज भी दोषी है। कोई भी कानून स्थिति सुधारने का दावा नहीं कर सकता, वह मात्र एक राह दिखाता है। जरूरत है कि बच्चों को पूरा पारिवारिक–सामाजिक–नैतिक समर्थन दिया जाये, ताकि वे राष्ट्र की नींव मजबूत बनाने में अपना योगदान कर सकें।

कई देशों में तो बच्चों के लिए अलग से लोकपाल नियुक्त हैं। सर्वप्रथम नार्वे ने 1981 में बाल अधिकारों की रक्षा के लिए संवैधानिक अधिकारों से युक्त लोकपाल की नियुक्ति की। कालान्तर में आस्ट्रेलिया, कोस्टारिका, स्वीडन 1993, स्पेन (1996), फिनलैण्ड इत्यादि देषों ने भी बच्चों के लिए लोकपाल की नियुक्ति की। लोकपाल का कर्तव्य है कि बाल अधिकार आयोग के अनुसार बच्चों के अधिकारों को बढ़ावा देना तथा उनके हितों का समर्थन करना। यही नहीं निजी और सार्वजनिक प्राधिकारियों में बाल अधिकारों के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना भी उनके दायित्वों में है। कुछ देशों में तो लोकपाल सार्वजनिक विमर्श में भाग लेकर जनता की अभिरुचि बाल अधिकारों के प्रति बढ़ाते हैं एवं जनता व नीति निर्धारकों के रवैये को प्रभावित करते हैं। यही नहीं वे बच्चों और युवाओं के साथ निरन्तर सम्वाद कायम रखते हैं, ताकि उनके दृष्टिकोण और विचारों को समझा जा सके। बच्चों के प्रति बढ़ते दुर्व्यवहार एवं बालश्रम की समस्याओं के मद्देनजर भारत में भी बच्चों के लिए स्वतंत्र लोकपाल व्यवस्था गठित करने की माँग की जा रही है।

आज जरूरत है कि बालश्रम और बाल उत्पीड़न की स्थिति से राष्ट्र को उबारा जाये। ये बच्चे भले ही आज वोट बैंक नहीं हैं पर आने वाले कल के नेतृत्वकर्ता हैं। उन अभिभावकों को जो कि तात्कालिक लालच में आकर अपने बच्चों को बालश्रम में झोंक देते हैं, भी इस सम्बन्ध में समझदारी का निर्वाह करना पड़ेगा कि बच्चों को शिक्षारूपी उनके मूलाधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिये। गैर सरकारी संगठनों और सरकारी मशीनरी को भी मात्र कागजी खानापूर्ति या मीडिया की निगाह में आने के लिये अपने दायित्वों का निर्वहन नहीं करना चाहिये वल्कि उनका उद्देश्य इनकी वास्तविक स्वतन्त्रता सुनिश्चित करना होना चाहिये। आज यह सोचने की जरूरत है कि जिन बच्चों पर देश के भविष्य की नींव टिकी हुई है, उनकी नींव खुद ही कमजोर हो तो वे भला राष्ट्र का बोझ क्या उठायेंगे। अतः बाल अधिकारों के प्रति सजगता एक सुखी और समृद्ध राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता है।

– राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र
जोधपुर– 342001 (राज.)

स्वामी श्रद्धानन्द जी का 92वां बलिदान दिवस समारोह
स्वामी श्रद्धानन्द ने राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक शिक्षा का प्रारूप दिया

स्वामी श्रद्धानन्द जी एक मात्र पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 20वीं शताब्दी में भारत में विदेशी आक्रांताओं द्वारा हिन्दुओं के जबरन धर्मान्तरण पर सवाल उठाया और साहसिक कदम उठाते हुए ऐतिहासिक शुद्धि आन्दोलन का सूत्रपात कर दिया, उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती ने काशी आर्य समाज बुलानाला में आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह के अवसर पर रविवार को बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

'स्वामी श्रद्धानन्द संस्कृति, संस्कार और राष्ट्रीय शिक्षा' विषयक संगोष्ठी में विषय स्थापन आर्य समाज के मंत्री श्री प्रकाश नारायण शास्त्री जी ने किया।

विशिष्ट वक्ता ख्यातिलब्ध आर्यनेत्री डॉ. गायत्री आर्या जी ने कहा कि लार्ड मैकाले की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के विरुद्ध राष्ट्र संस्कृति और संस्कारों की रक्षा के लिए स्वामी जी ने राष्ट्रीय शिक्षा का प्रारूप दिया जिससे राष्ट्रीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा की चेतना को विस्तार मिला, स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा से सैकड़ों गुरुकुलों की स्थापना हुई।

आर्य विद्वान् पं ज्ञान प्रकाश आर्य ने बतलाया कि स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली की जामा मस्तिद की वेदी से मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ने का भावनात्मक आह्वान किया था।

श्री श्रीनाथ सिंह पटेल काशी आर्य समाज के प्रधान ने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने आजीवन दलितोत्थान तथा नारी सशक्तिकरण के लिए कार्य किया। स्वामी जी ने सोशल इंजीनियरिंग को नई दिशा दी।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, श्री रमेश जी आर्य, श्री लल्लन जी आर्य ने यज्ञ सुसम्पन्न कराया। यजमान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल तथा बृज भूषण सिंह थे।

संगोष्ठी में सर्वश्री प्रकाश नारायण शास्त्री, डॉ. विशाल सिंह, डॉ. गायत्री आर्या, श्री रविन्द्र नाथ, विभा आर्या, हेमा आर्या, राधेश्याम आर्य, अमरनाथ आर्य सहित अन्य महानुभाव उपस्थित रहे। श्री रमेश आर्य एवं श्री लल्लन आर्य ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति कर श्रोताओं को प्रभावित किया। श्री एस.एन. कुशवाहा जी ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री तथा धन्यवाद प्रकाश श्री बृजभूषण सिंह ने किया।

श्री प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री, काशी आर्य समाज मार्ग बुलानाला, वाराणसी–221001

।। ओ३म्।।

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी सम्वत् 2075–76 तदनुसार सन् 2019 ई.

क्र.सं.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
1.	मकर संक्रान्ति	माघ सुदी-08	2075	14-01-2019	सोमवार
2.	वसन्त पंचमी	पौष सुदी-5	2075	10-02-2019	रविवार
3.	सीताष्टमी	फाल्गुन बदी-8	2075	26-02-2019	मंगलवार
4.	महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन बदी-10	2075	01-03-2019	शुक्रवार
5.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)	फाल्गुन बदी-13	2075	04-03-2019	सोमवार
6.	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी-3	2075	09-03-2019	गुरुवार
7.	मिलन पर्व/नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी-15	2075	20-03-2019	बुधवार
		चैत्र बदी-1		21-03-2019	गुरुवार
8.	आर्यसमाज स्थापना दिवस (नव-सम्वत्सर)	चैत्र सुदी-1	2076	06-04-2019	शनिवार
9.	रामनवमी	चैत्र सुदी-9	2076	13-04-2019	शनिवार
10.	वैशाखी	चैत्र सुदी-10	2076	14-04-2019	रविवार
11.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण सुदी-3	2076	03-08-2019	शनिवार
12.	श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी-15	2076	15-08-2019	गुरुवार
13.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद बदी-8	2076	24-08-2019	शनिवार
14.	विजयदशमी/दशहरा	आश्विन सुदी-10	2076	08-10-2019	मंगलवार
15.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन सुदी-12	2076	10-10-2019	गुरुवार
16.	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक बदी-15	2076	27-10-2019	रविवार
17.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष बदी-11	2076	23-12-2019	सोमवार

विशेष टिप्पणी : 1. आर्यसमाजें एवं आर्य जन इन पर्वों को उत्साहपूर्वक मनाएं।
2. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

स्वामी आर्यवेश
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, (निकट रामलीला मैदान), नई दिल्ली-2,
दूरभाष : 23274771, 23260985

पावन पर्व मकर संक्रांति

– पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य (भजनोपदेशक)

आर्यों का यह मकर संक्रांति पावन पर्व है।
पर्वों का यह तो मूल है, हम सबको इस पर गर्व है।।
राम, कृष्ण, ऋषिवृन्द ने, इस पर्व को माना सुनों।
पाला सनातन धर्म को था सत्य को जाना सुनों।।
इस दिन घरों में यज्ञ पावन, आर्यजन करते थे सब।
वैदिक कथा से मानसिक, पीड़ा सकल हरते थे सब।।
ज्ञान की गंगा विमल, बहती थी, प्रजा थी सुखी।
था स्वर्ग का वातावरण, कोई नहीं था तब दुखी।।
शासक थे सब धर्मात्मा, प्रजा का रखते ध्यान थे।
वीर, व्रतधारी, सदाचारी, महा बलवान थे।।
विश्व हित की योजना, इस दिन बनाते थे सुनों।
न्यायकारी थे प्रजा का, दुख मिटाते थे सुनों।।
हम गुरु थे विश्व के, इसका सुखद परिनाम था।
भारतीय सब देवता थे, हर तरफ आराम था।
चोर, डाकू, दुष्ट मद्यप, इस जगत में थे नहीं।
व्यभिचारिणी नारियां, तब विश्व में ना थीं कहीं।।
खान–पान था सात्विक, थे आर्यजन धर्मात्मा।
कर देते थे एक पल में, पापियों का खात्मा।।
यदि अर्थ इस त्यौहार का, संसार सारा जान ले।
गौतम, कपलि, दयानन्द की, यदि सीख दुनियां मान ले।।
सद्भावना जागे दिलों में, विश्व के कल्याण की।
सब भक्त ईश्वर के बने, बातें तजें अभिमान की।।
वेद के अनुकूल जीवन, यह हमारा हो प्रभु।
सबके जीवन का सहारा, तू ही प्यारा हो प्रभु।।
विश्वास है हमको जगत के, दूर होंगे दुःख सभी।
दीन–दुखिया ना रहेंगे, प्राप्त होंगे सुख सभी।।
उग्रवादी, दुष्ट पापी, फिर सभी मिट जायेंगे।
परोपकारी आर्यजन, फिर वेद गाथा गायेंगे।।
आर्यों! सुन लो सभी तुम, वेद प्रचारक बनो।
बन जाओ त्यागी तपस्वी, सत्य के पालक बनो।।
हे ईश! तुम वरदान दो, हम कर्म नेकी के करें।
मानव सभी मानव बनें, संसार की पीड़ा हरें।।

– ग्राम व पो.–बहीन, जिला–पलवल, हरियाणा
मो.:–9813845774

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माधयम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं
आर्य राष्ट्र के शंखनाद राजधर्म 'मासिक' पत्रिका की
स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर भव्य

स्वर्ण जयन्ती समारोह

दिनांक : 9, 10 मार्च, 2019 (शनिवार, रविवार)

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण

- चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
- स्मारिका का विमोचन
- कर्मठ कार्यकर्ताओं का सम्मान
- आगामी 50 वर्षों के कार्यों की घोषणा।
- 50 वर्ष के इतिहास पर डोक्यूमेंट्री फिल्म।
- व्यायामाचार्यों एवं योग शिक्षकों का सम्मान
- 50 जीवनदानी कार्यकर्ता तैयार करने का लक्ष्य।
- परिषद् के संस्थापकों एवं सहयोगियों का सम्मान
- पिछले 50 वर्षों की ऐतिहासिक गतिविधियों की प्रदर्शनी।
- 'राजधर्म' मासिक पत्रिका के पिछले 50 वर्षों में प्रकाशित महत्वपूर्ण अंकों की प्रदर्शनी।
- स्वामी इन्द्रवेश जयन्ती समारोह एवं चतुर्वेद महायज्ञ पूर्णाहुति कार्यक्रम 9 मार्च, 2019 को।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, हरियाणा
9416630916, 9354840454, 9468165946

गुरु ब्रह्मानन्द जन्मोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

दिनांक 25 दिसम्बर, 2018 को गुरु ब्रह्मानन्द जन्मोत्सव गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम सफीदों, जीन्द में आचार्य राजेन्द्र जी गुरुकुल कालवा की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यक्रम का संयोजन स्वामी नित्यानन्द सरस्वती (पूर्व नाम महेन्द्र सिंह शास्त्री) उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया। संरक्षक एवं प्रधान ब्रह्मचारी रामस्वरूप जी महाराज का भी सान्निध्य प्राप्त रहा।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. अशोक तंवर (अध्यक्ष, पी.सी.सी. हरियाणा) ने बोलते हुए कहा कि आज मुझे अच्छा लग रहा है कि मैं साधू–संतों के बीच समय व्यतीत कर रहा हूँ, यह मेरी बचपन की आदत है। आर्य समाज वह क्रांतिकारी संस्था है जिसकी बदौलत भारत देश आजाद हुआ। उन्होंने कहा कि यदि आर्य समाज नहीं होता तो बाबू जगजीवनराम व डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे योग्य नेता देश को नहीं मिलते, क्योंकि आर्य समाज की संस्थाओं और नेताओं के सान्निध्य में इन्होंने बहुत कुछ सीखा एवं प्राप्त किया।

स्वामी नित्यानन्द जी ने कहा कि स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज एक उच्च दर्जे के सन्त थे, जिन्होंने अपने जीवन में पूरे

देश में भ्रमण कर सैकड़ों (चारो वेदों के) बड़े–बड़े यज्ञ किये। ये स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के शिष्य थे। इस अवसर पर 24 व 25 दिसम्बर को प्रत्येक वर्ष गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम सफीदों में भंडारा का आयोजन किया जाता है। इस आश्रम में आर्ष साहित्य के साथ शास्त्री के पाठ्यक्रम की पढ़ाई भी कराई जाती है। डॉ. हरि सिंह शास्त्री, प्राचार्य के रूप में यहां कार्य देख रहे हैं। इसी वर्ष 1 जुलाई, 2019 से छठीं एवं सातवीं कक्षों के छात्रों को भी प्रवेश दिया जायेगा।

कार्यक्रम के अन्त में स्वामी नित्यानन्द जी ने सम्मेलन में पहुँचे सभी साधु–संतों एवं आर्य जनता का धन्यवाद किया। इस अवसर पर विशेषकर श्री प्रदीप जैलदार, गुरुग्राम, श्री बिजेन्द्र कादियान पानीपत, सरदार निर्मल सिंह एडवोकेट, श्री वेदपाल आर्य एडवोकेट धड़ौली, श्री सुरेश गुप्ता एडवोकेट, श्री नरेश जांगड़ा, प्रो. सुरेश शास्त्री समालखा, गायक श्री वीरेन्द्र देशवाल, पूर्व आई.ए.एस. श्री राम भगत लांग्यान सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर एवं अभूतपूर्व सफलता के

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।